सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोधपत्रिका का वर्ष 2021 का नवम अंक आपके करकमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोधलेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं।

इस अंक में सर्वप्रथम देवर्षि कलानाथ शास्त्री का 'सावन की सतरंगी पूनम' शीर्षक लेख में रक्षाबन्धन एवं श्रावणी पूर्णिमा के सन्दर्भ में प्रचलित लोकमतों की प्रस्तुति भारतीय संस्कृति की दृष्टि से पर्याप्त महत्त्वपूर्ण है। दूसरा लेख 'राजस्थान के भूले बिसरे स्वतन्त्रता सेनानी' भारतीय क्रान्तिकारियों के त्याग बलिदान एवं शौर्य के ऐतिहासिक प्रसंगों को प्रस्तुत करता है, जो ऐतिहासिक महत्त्व का विषय है। तत्पश्चात् डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा प्रस्तुत 'भारतीय ब्राह्मीलिपि (भ्रान्ति निवारण)' लेख में समीक्षा चक्रवर्त्ती पं. मधुसूदन ओझा द्वारा ब्राह्मी लिपि के वैदिककालीन होने के उन प्रमाणों को प्रस्तुत किया गया है, जो वैदिक वाङ्मय में उपलब्ध होते हैं। भारतीय पुरालिपि विज्ञान के विषय में यह अनुसन्धानात्मक लेख उन सब भ्रान्तियों का निराकरण कर देता है, जिनके आधार पर ब्राह्मी लिपि को बौद्धेतरकालीन या अशोककालीन माना जाता रहा है। इसी क्रम में डॉ. रामदेव साहू द्वारा लिखित 'ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति' लेख में वेदविज्ञान के आधार पर ब्रह्माण्डोत्पत्ति की अठारह अवस्थाओं का आनुक्रमिक प्रस्तुतीकरण किया गया है। वैद्य गोपीनाथ पारीक द्वारा लिखित 'अन्नं वै ब्रह्म' में स्वास्थ्य चेतना के विषय की सरलतम प्रस्तुति हुई है। अन्त में डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर के 'राष्ट्रोपनिषत् प्रस्तावना शतकम्' के कतिपय पद्य प्रकाशित किये गये हैं, जो गुरुशिष्यपरम्परा के गौरव को प्रदर्शित करने के साथ साथ आत्मचिन्तन की प्रेरणा प्रदान करने वाले हैं।

आशा है, सुधी पाठक इन्हें रुचिपूर्वक हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

सम्पादक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा